Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नागार्जुन के काव्य में नारी जीवन

बबिता कुमारी *

* शोधार्थी, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखंड) भारत

प्रस्तावना – नागार्जुन का साहित्यिक योगदान हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वे एक ऐसे कवि थे जिन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं को अपने काव्य में चित्रित किया, जिसमें नारी जीवन भी शामिल है। नागार्जुन का नारी के प्रति दृष्टिकोण उनके समाजवादी विचारधारा से प्रभावित था, जिसमें उन्होंने नारी को केवल एक पारंपरिक रूप में नहीं बल्कि एक स्वतंत्र और समानाधिकारिता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया।

नागार्जुन के काव्य में नारी का चित्रण उनके समाजवादी दृष्टिकोण और मानवीय संवेदनाओं का जीवंत प्रमाण है। उन्होंने नारी को समाज के विभिन्न रूपों में देखा और उसे केवल एक पारंपरिक भूमिका तक सीमित नहीं रखा। उनके काव्य में नारी को एक स्वतंत्र, संघर्षशील, और सशक्त इकाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है। नागार्जुन का नारी के प्रति यह दृष्टिकोण समाज में नारी की स्थिति को सुधारने और उसे उसके वास्तविक अधिकारों और सम्मान से विभूषित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उनके काव्य से हमें नारी के प्रति एक नए और प्रगतिशील दृष्टिकोण को समझने में मदद मिलती है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि उनके समय में था।

नागार्जुन के काव्य में नारी का यह चित्रण समाज के उन पक्षों को उजागर करता है, जिन्हें सुधार की आवश्यकता है, और नारी को उसके वास्तविक स्थान पर स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। उनके काव्य में नारी के विभिन्न रूप हमें नारी जीवन की जटिलताओं और उसके संघर्षों को समझने का अवसर प्रदान करते हैं। यह नारी के प्रति उनके दृष्टिकोण की व्यापकता और गहराई को दर्शाता है, जो उनके साहित्यिक योगदान को और भी महत्वपूर्ण बनाता है।

नागार्जुन के काव्य में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण मिलता है। उनके काव्य में नारी को माँ, पत्नी, प्रेमिका, विद्रोहिणी, और संघर्षशील के रूप में चित्रित किया गया है। ये सभी रूप नागार्जुन की नारी के प्रति गहरी संवेदनशीलता को दर्शाते हैं।

नागार्जुन के काव्य में माँ का रूप विशेष स्थान रखता है। माँ को उन्होंने ममता और त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया है। उनके काव्य में माँ केवल एक घरेलू स्त्री नहीं है, बल्कि एक ऐसी सशक्त नारी है जो अपने परिवार के लिए अनगिनत कष्ट सहती है। उनके इस दृष्टिकोण में समाज के प्रति उनका ममता से भरा हुआ हृदय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

पत्नी के रूप में नारी का चित्रण नागार्जुन ने एक समर्पित और संवेदनशील साथी के रूप में किया है। उनके काव्य में पत्नी का चित्रण ऐसा है जो अपने पति और परिवार के प्रति निष्ठा और प्रेम से परिपूर्ण है। नागार्जुन ने पत्नी को केवल एक पतिव्रता के रूप में नहीं, बल्कि एक सहयोगी और सजीवता से भरी हुई महिला के रूप में प्रस्तुत किया है, जो समाज में अपने अधिकारों के लिए सजग है। 'सिंदूर तिलकित भाल' शीर्षक कविता में अपनी पत्नी की याद करते हुए कहते हैं–

घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल
याद आता है तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल

प्रेमिका के रूप में नारी का चित्रण नागार्जुन के काव्य में एक अनोखे रूप में किया गया है। प्रेमिका का रूप उनके काव्य में केवल शारीरिक आकर्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गहन मानसिक और भावनात्मक संबंध को दर्शाता है। नागार्जुन की प्रेमिका स्वतंत्र है, जो अपने प्रेम को बिना किसी सामाजिक बंधन के जीती है।

नागार्जुन के काव्य में विद्रोहिणी नारी का भी चित्रण मिलता है। यह वह नारी है जो समाज के अन्याय और असमानता के खिलाफ विद्रोह करती है। नागार्जुन ने नारी को एक ऐसी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जो समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ अपनी आवाज उठाती है। उनकी कविताओं में विद्रोहिणी नारी समाज के पुराने ढांचे को तोड़ने और एक नए समाज की स्थापना के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है ।

नागार्जुन के काव्य में नारी को एक संघर्षशील योद्धा के रूप में भी देखा जा सकता है। वह नारी जो अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है, जो अपने अस्तित्व के लिए लड़ती है। नागार्जुन के काव्य में ऐसी नारी का चित्रण मिलता है जो अपने जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष करती है, चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो या पारिवारिक।

नागार्जुन के काव्य में नारी का चित्रण केवल एक साहित्यिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह उनकी सामाजिक दृष्टि को भी प्रतिबिंबित करता है। नागार्जुन ने नारी को समाज में उसके वास्तविक स्थान पर रखने की वकालत की है। उनका मानना था कि नारी केवल एक घर की सजावट नहीं है, बल्कि समाज के निर्माण में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने नारी की स्वतंत्रता और समानता के पक्ष में अपनी कविताओं के माध्यम से समाज को जागरूक किया।

नागार्जुन के काव्य में नारी का चित्रण एक विस्तृत और गहन दृष्टिकोण से किया गया है। उनके काव्य में नारी को एक व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपनी स्वतंत्रता, अधिकारों, और समाज में अपने स्थान के लिए सजग है। नागार्जुन ने नारी को एक सशक्त इकाई के रूप में प्रस्तुत

किया है।

एक ऐसा समाज जहाँ आज भी बेटियों को खरीदने और बेचने का व्यापार चलता है। पशुओं की तरह उनकी बोली लगाई जाती है। जो बेचते हैं वे गरीबी का बहाना करते हैं और जो खरीदते हैं वे उम्र से भारी और अमीरी का रौब लिए रहते हैं। इन दोनों के बीच यदि किसी का जीवन नर्क होता है– तो वह लड़कियों का। सब जानते हुए भी दोनों पक्ष धर्म की दुहाई देकर स्वयं को दोषमुक्त कर लेता है। बाबा नागार्जुन की मैथिली में लिखित कविता – 'बूढ़ बर' इसका एक उदाहरण है। इस कविता में अपने से तीन गुने उम्रवाले दुल्हे के हाथ बेच दी गई लड़की की व्यथा–कथा है–

कुमरठेली मैं, बाप उतावले थे,
बेचने को आकुल, बावले थे
नौ सौ में पटा अंतिम लगन में जाकर
और पिता ने ही काट दी मेरी गर्दन।

यह कविता जितनी मार्मिक है उतनी ही कलात्मक भी है। यह पूरी कविता संवाद शैली में लिखी गई जिसमें वर को देखकर लड़की की माँ, पिता से प्रश्न करती है। वह पूछती है कि अपनी फूल–सी बेटी के लिए घुन खाई लकड़ी (बूढ़ बर) लेकर आए हो , मडुए (एक प्रकार का अन्न) के भाव में बेटी को बेच दिया, इससे तो अच्छा होता कि जन्म लेते ही नमक चटाकर मार देते? पिता पैसे की पोटली दिखाने के साथ–साथ धन और खेत का हवाला देता है और खुशी– खुशी परिछावन करने को कहता है–

तड़पती हुई मसलती रही हाथ
पिता के आगे माँ ने झुका दिया माथ,
हृदय लेकिन हाहाकार करता है
अंदर से कलेजा सुलगता है जलता है

वह लड़की सोचती है कि रिश्ते में कोई भी हो पर यदि वह जाति से पुरुष है तो स्त्रियों पर अन्याय, अत्याचार करना उसका धर्म है और अधिकार भी –

जा रे राक्षस, जारे पुरुष–जात!
तेरी ही मारी मर रही हैं हम,
कराह रही हैं, कुहर रही हैं हम
खरीदते हो हमें देकरके टाका,
रुलाते हो हमे होकर बाप और काका
गुजरता है पानी की तरह दिन मेरा
जीवन हो गया है कैसा कठिन मेरा
सुने कौन आज, किसे क्या कहूँ,
फटो हे धरती, समा मैं जाऊँ!

यह कविता पुराने ढांचे को तोड़कर एक नए और परिष्कृत समाज की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है।आज भी एक ऐसा समाज जहाँ बेटियों को खरीदने और बेचने का व्यापार चलता है। पशुओं की तरह उनकी बोली लगाई जाती है. जो बेचते हैं वे गरीबी का बहाना करते हैं और जो खरीदते हैं वे उम्र से भारी और अमीरी का रौब लिए रहते हैं। इन दोनों के बीच यदि किसी का जीवन नर्क होता है– तो वह लड़कियों का सब जानते हुए भी दोनों पक्ष धर्म की दुहाई देकर स्वयं को दोषमुक्त कर लेता है। बाबा नागार्जुन की मैथिली में लिखित कविता– 'बूढ़ बर' इसका एक उदाहरण है, इस कविता में अपने से तीन गुने उम्रवाले दुल्हे के हाथ बेच दी गई लड़की की व्यथा–कथा है–

कुमरठेली मैं, बाप उतावले थे,
बेचने को आकुल, बावले थे
नौ सौ में पटा अंतिम लगन में जाकर
और पिता ने ही काट दी मेरी गर्दन

कविता जितनी मार्मिक है उतनी ही कलात्मक भी है। यह पूरी कविता संवाद शैली में लिखी गई जिसमें वर को देखकर लड़की की माँ, पिता से प्रश्न करती है। वह पूछती है कि अपनी फूल–सी बेटी के लिए घुन खाई लकड़ी (बूढ़ बर) लेकर आए हो। मडुए (एक प्रकार का अन्न) के भाव में बेटी को बेच दिया, इससे तो अच्छा होता कि जन्म लेते ही नमक चटाकर मार देते? पिता पैसे की पोटली दिखाने के साथ–साथ धन और खेत का हवाला देता है और खुशी– खुशी परिछावन करने को कहता है –

तड़पती हुई मसलती रही हाथ
पिता के आगे माँ ने झुका दिया माथ,
हृदय लेकिन हाहाकार करता है
अंदर से कलेजा सुलगता है जलता है।

वह लड़की सोचती है कि रिश्ते में कोई भी हो पर यदि वह जाति से पुरुष है तो स्त्रियों पर अन्याय, अत्याचार करना उसका धर्म है और अधिकार भी–

जा रे राक्षस, जारे पुरुष–जात!
तेरी ही मारी मर रही हैं हम,
कराह रही हैं, कुहर रही हैं हम
खरीदते हो हमें देकरके टाका,
रुलाते हो हमे होकर बाप और काका
गुजरता है पानी की तरह दिन मेरा
जीवन हो गया है कैसा कठिन मेरा
सुने कौन आज, किसे क्या कहूँ,
फटो हे धरती, समा मैं जाऊँ!

मैथिली में ही एक दूसरी कविता है जिसका शीर्षक है– 'विलापय' इसके शीर्षक से ही भाव का पता चलता है. यह एक बाल विधवा का विलाप है जो कवि को इस प्रकार सुनाई देता है–

नन्ही सी कली पीती थी दूध,
सुनती थी राजा रानी की कथा,

उसी तीन वर्ष की कली का विवाह कर दिया जाता है और कुछ ही साल बाद वह विधवा हो जाती है। धर्म के नाम पर उसके साथ भी वह सब किया जाता है जिसका उसे ज्ञान भी नहीं है। समाज और परिवार से उसका विश्वास उठ जाता है। यह कविता इतनी मार्मिक है कि इसे पढ़ पाना मुश्किल हो जाता है। वह छोटी–सी लड़की कैसे मृत्यु की कामना करती है–

आग छूती हूँ पर जलती नहीं
जहर खाती पर मरती नहीं
फटता है कलेजा पर निकलता नहीं प्राण
कौन–सा पाप किया था हे भगवान।

इतनी छोटी उम्र में ही अपने महत्वहीन जीवन के सच को समझने लगती है। न केवल समझती है, बल्कि स्वीकार भी करती है–

मरूँगी तो भी रोएगा नहीं कोई,
जीऊँ तो भी आएगा नहीं कोई।

अंत में वह स्वयं से ही प्रश्न करती है कि यह भी कोई जिन्दगी है? इससे तो कुत्तो बिल्लियों का जीवन अच्छा है जिन पर माँ–बाप या समाज का

कोई दबाव नहीं है। क्या इस संसार की सारी विधवाएँ दीन, हीन पशु की तरह जीवन बिताती हैं? वह श्राप देती है–

विधवाएँ मेरी जैसी हजार के हजार
बहाए जा रही हैं आँसुओं की धार
उसी में डूब जाय यह देश
डूब जाय सब लोग बाग
नाश हो या बज्र भले गिरे
ऐसी जाति पर भले ही धंसना धंसे
हो जाय भूकम्प या धरती फट जाय
माँ मिथिला रहकर क्या करोगी!

तालाब की मछलियाँ में परिवर्तन की आवाज सुनाई देती है. यह एक लंबी कविता है. इसमें बार–बार 'परिधि गई है टूट', 'कोशी की धार ने आकर तोड़ दिया है भिंड़ा', 'हम भी मछली तुम भी मछली', 'दोनों ही उपभोग की वस्तु हैं', जैसी शब्दावलियों का आना स्त्री विमर्श के दूसरे दौर का संकेत देता है। उस बेचौनी, उस आक्रोश की ओर संकेत करता है जो सदियों से दबी पड़ी हैं–

उथल पुथल है जन जीवन में
सभी ओर उत्क्रांति हो रही है,
टूट रहे हैं अंत:पुर के ढाँचे
आज या कि कल
तुम भी तो निकलोगी बाहर
हवेलियों से, डेवढ़ियों से
फिर जनपद के खंड नरक मिट जाएँगे
शब्दकोश को छोड़ कहीं भी
नहीं 'असूर्यस्पर्श्या' का अस्तित्व रहेगा
औरतदारी रह न जाएगी।

जनसत्ता को दिए एक साक्षात्कार में बाबा ने कहा था कि 'यदि विधाता हो तो सात या नौ वर्ष के लिए माँग लें कि हमको स्त्री बनाओ' मुझे लगता है कि सबसे बड़ी हरिजन (दलित) जो हैं वो स्त्रियाँ हैं। इनका दलितपना कब समाप्त होगा, ये हम सबको नजर नहीं आ रहा है। विदेशी रेडियो से हम सुनते हैं कि औरत को तेरह तरह के भार झेलने होते हैं। गर्भ भार उनकी तुलना में बहुत कम है।

बाबा की एक और लेकिन विशेष कविता का जिक्र करना चाहती हूँ. वह कविता है– 'जया', जया चार साल की एक गूँगी–बहरी लड़की को केन्द्र में रखकर लिखी गई कविता है। कवि उस गूँगी–बहरी लड़की की भाषा और उसके भावों को समझता है। वह जानता है कि उसके पास भी उसकी अपनी एक भाषा है–

छोटे–छोटे मोती जैसे दांतों की किरणें बिखेरकर
नीलकमल की कलियों जैसी आँखों में भर
अनुनय सादर
पहले पीछे शासक सी तर्जनी उठाकर
इंगित करती, नहीं मैं जाने दूँगी
चार साल की चपल चतुर वह बहरी गूँगी।

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि नागार्जुन की कविता न केवल नारी के जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण करती है, बल्कि उसे आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित भी करती है। उनकी कविता नारी के प्रति समाज की सोच को बदलने की आवश्यकता पर बल देते हुए नारी के जीवन के संघर्षों और उसकी आंतरिक शक्ति को बेहद सजीव तरीके से कटाक्ष करते हैं, जिससे उनकी कविता समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणादायक बन जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पाण्डेय, मैनेजर, आलोचना की सामाजिकता, दरियागंज, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन 2008 , पृ. 24
2. पाण्डेय मैनेजर, नागार्जुन चयनित कविताएँ, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 2019, पृ.56
3. मिश्र, शोभा कान्त,नागार्जुन रचनावली, पटना : राजकमल प्रकाशन, 2003, पृ. 57
4. त्रिपाठी प्रो. राधावल्लभ, बहस में स्त्री, नई दिल्ली : साहित्य संभावना प्रकाशन 2014, पृ. 40
5. पाण्डेय मैनेजर,उपन्यास और लोकतंत्र, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2023, पृ.56
6. शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2003, पृ. 59

****